हिन्दी भाषा का विकास : संचार माध्यमों के संदर्भ में

डॉ. नसरीन जान

किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम के द्वारा समाज के विशाल वर्ग से संवाद स्थापित करना जनसंचार कहलाता है। विज्ञान तथा तकनीकी विकास के साथ-साथ मानव जीवन में संचार माध्यम उभरे हैं। जनसंचार के प्रमुख माध्यम हैं- समाचार पत्र, रेडियो, टी.वी, इंटरनेट, सिनेमा आदि।

सूचना और विचार के सम्प्रेषण से मानव मन को प्रभावित करने के लिए आज संचार माध्यम जिस तेजी और मजबूती के साथ लोकमत बनाने या बदलने की क्षमता रखते हैं वैसा सामाजिक क्षेत्र का कोई और उपकरण नहीं रखता। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में संचार माध्यमों का बहुतबड़ा योगदान है। इतिहास पर दृष्टिडाले तो संचार के रूप में हिन्दी का प्रयोग जन कथा एवं पुराण कथा के रूप में स्थान पा गई थी। संचार माध्यमों के विकास के साथ हिन्दी का भी विकास हुआ है। आज अहिन्दी प्रदेशों में भी प्राय: हिन्दी बोली और समझी जाती है। ऐसा जनसंचार माध्यमों के कारण ही संभव हो पाया है। परंतु कुछ विद्वानों का यह मानना है कि संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी भाषा से हिंदी का रूप विकृत हो रहा है या उसकी मौलिकता नष्ट हो रही है। परन्तु यदि हम ध्यान दें तो हिन्दी एक उदार भाषा है और उसने दूसरी भाषा के शब्दों को बड़ी ही आसानी से आत्मसात कर लिया है।संचार माध्यम की भाषा के रूप में प्रयुक्त होने पर हिन्दी समस्त ज्ञान-विज्ञान और आधुनिक विषयोंसे सहज ही जुड़ गई है। संचार माध्यमों के कारण हिन्दी बोलने समझने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

संचार माध्यमों में पत्र-पत्रिकाओं का प्रथम स्थान है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। समाचार पत्र और पत्रिकाओं ने ही आज़ादी के मांग के नारे को सारे देश में पहुँचाया और पत्र-पत्रिकाओं ने हिन्दी को एक नई सोच और नया आयाम प्रदान किया। उदाहरणत: हिन्दी प्रदीप, सरस्वती, जागरण,माधुरी, हंस, आज, कर्मवीर, प्रताप, प्रतीक, नवभारत टाइम्स, धर्मयुग आदि ने हिन्दी भाषा को एक नया रूप प्रदान किया। समय की मांग को देखते हुए अंग्रेज़ी की अनेक प्रमुख पत्रिकाएं आज हिन्दी मेंप्रकाशित हो रही है। इण्डिया टूडे, बिजनेस इण्डिया, बेटर फोटोग्राफीआदि इसके उदाहरण हैं।

संचार माध्यम रेडियो से भारतीयों का सम्बंध काफी पहले से जुड़ा हैं। रेडियो में गाने, समाचार, नाटक, ज्ञान-विज्ञान और न जाने कितने ही मनोरंजक और ज्ञान वर्धक कार्यक्रम हिन्दी भाषा में प्रसारित होते हैं। सीमा पर तैनात जवान हों या खेतों पर काम करता किसान, किताबों में खोया विद्यार्थी हो या सड़क पर रेहड़ी लगाने वाले या फिर घर पर फुरसत के चंद पल बिता रहे कोई घर के सदस्य, आकाशवाणी की हिन्दी सेवा हर जगह हर पल उनके साथ है।

सिनेमा अपने शैशव काल से ही हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार का माध्यम रहा है। इसमें संदेह नहींकिसिनेमाने हिन्दी की लोकप्रियता भी बढ़ाई है और व्यावहारिकता भी। आज हिन्दी को व्यापक लोकप्रियता और सम्प्रेषण माध्यम के रूप में जो आम स्वीकृति मिल रही है यह स्थिति उसे संवैधानिक प्रावधानों अथवा सरकारी दबावों से नहीं मिल पाई। इसका श्रेय निश्चित रूप से हिन्दी सिनेमा को जाता है।सिनेमा के माध्यम से हिन्दी ग्रामीणों तक ही नहीं दूरस्थ देशों में भी पहुँच रही है। हिन्दी फिल्मी गीतों ने हिन्दी भाषा की लोकप्रियता में वृद्धि की है। चूंकि गीत और उसकी धुन आसानी से हमारी स्मृति का अंग बन जाते हैं इसलिए भाषायी प्रचार-प्रसार का सहज वदीर्घ जीवीमाध्यम बनते हैं। हिन्दी फिल्मी गीतों में यह गुण विशेष रूप में व्याप्तहै। ये फिल्मी गीत अहिन्दी भाषियों में हिन्दी भाषा के प्रति कौतुहल जगाते हैं और इस भाषा को सीखने की प्रेरणा देते हैं।

आज का समय ब्रॉडकास्ट मीडिया का है। लोगों के घरों में व्याप्त टेलीविजन हिन्दी भाषा और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। डॉ. बी. सन्तोषकुमारी के शब्दों में "टेलीविजन की शुरुआत भारत में एक नई क्रांतिलेकर आई थी जिसने दर्शकों को जोड़ा वह थी भाषा हिन्दी, उनकी अपनी भाषा जिसे वे प्रतिदिन एक दूसरे से बोलते थे और जिस भाषा में उनका जीवन यापन होताथा जब वही भाषा टेलीविजन के किरदार भी बोलने लगे तो समंवयवादिता दृष्टि जाग्रत हुई।"[1]न्यूयार्क टाइम्स ने 11 फरवरी 2007 को एक लेख प्रसारित किया जिसके अनुसार 2007 के आंकड़ों में भारत में लगभग 10.5 करोड़ घरोंमें टेलीविजन है। जिस गति से टी.वी घर-घर तक पहुँचा उतनी ही तेज़ीसे हिन्दी ने भी अपने पैर अहिन्दी भाषा क्षेत्रों में जमाए। टेलीविजन के प्रमुख चैनलों जैसे स्टार टी.वी, जी टी.वी, डिसकवरी, आज तक, डिजनी इत्यादि ने हिन्दी को अपनी प्रमुख भाषा के रूप में मान्यता दी है।

टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले आधे घंटे के कार्यक्रमों में लगभग छह से आठ मिनट तक के विज्ञापन दिखाए जाते हैं और 90% उसकी भाषा हिन्दी ही होती है। विज्ञापनों में समाज के उच्च वर्ग तक के लोगों को हिन्दी बोलते हुए दिखाते हैं। डॉ. बी. संतोष कुमारी के अनुसार "विज्ञापन हिन्दी के माध्यम से घर-घर को अपने उत्पाद से जोड़ते हैं और हिन्दी विज्ञापन के कंधे पर चढ़कर नयी दुनिया देखती है।"[2]

1977 में संचार क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रांति आई। ईसी आई एल हैदराबाद की एक कम्पनी ने 1977 में हिन्दी में 'फोर्ट्रान' नामक कंप्यूटर भाषा में एक प्रोग्राम चलाया, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कंप्यूटर पर सर्वप्रथम हिंदी के दर्शन 1977 में हुए। बिरला विज्ञान और टेक्नोलॉजी संस्थान, पिलानी और डि.सी.एम, दिल्ली के संयुक्त प्रयास से प्रथम द्विभाषी कंप्यूटर 'सिद्धार्थ' का विकास 1980 के आसपास हुआ। 1999 में इंटरनेट पर हिंदी की क्षमता के दर्शन हुए। इसी खोज में वेब दुनिया में ई-मेल, चाटिंग सम्मिलितकिया गया। हिन्दी के विकास में यह एक मील का पत्थर साबित हुआ। आजसाफ्ट्वेयर कम्पनी,'सुवि इन्फर्मेशन सिस्टम' इंदौर ने हिन्दी में नि:शुल्क ई-मेल का श्रीगणेश कर दिया है।हिन्दी के अनेक पोर्टल भी प्रारम्भ हो गए हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने सन्युक्त रूप से हिन्दी शब्दावली का इंटरनेट तैयार किया है।

इंटरनेट की दुनिया में न केवल हिन्दी भाषाकी पठन सामग्री को हम गूगल पर सरलता से ढूंढ सकते हैं बल्कि देश-विदेश के समाचार, बाज़ार का भाव, मौसम, ई-बैंकिंग, ई-विनिमय, ई-शापिंग, ई-पत्र सबका हिंदी में लाभ उठा सकते है। सारी दुनिया के जाने-अंजाने लोगों को जोड़ने और एक दूसरे के करीब लानेवाले फेसबुक वेबसाइट पर भी लाखों की संख्या में लोग ज्यादा प्रभावपूर्ण ढंग से अपने विचार व्यक्त करने के लिए हिन्दी कासहारा ले रहे हैं। आजकल हिन्दी के कई साफ्टवेर्स इंटरनेट परउपलब्ध है जैसे कि Unicode,C-DAC, Baraha, Akshar, Krutidevआदि। साफ्टवेर्स की सहायता से अंग्रेजी की-बोर्ड पर हिन्दी भाषा टाईप कर सकते है, कुछ कम्पनियों के हिन्दी की-बोर्ड भी बाजार में उपलब्ध हैं।

हिन्दी विकास में मल्टी मीडियाका विशेष योगदान है। लगभग विदेशी विश्वविद्यालयमें हर कक्षा में डी.वी.डी.प्लेयर, सीड़ी कैसेट प्लेयर रखे जाते हैं। उच्च श्रेणी कक्षा में इण्टरनेट पर समाचार भी पढ़े जाते

हैं। आजकल मल्टी मीडिया भाषा शिक्षण का अभिन्न अंग बन गया है। इतना ही नहीं आज मोबाईल में भी हिन्दी अपना राज चला रहा है।

निष्कर्षत: कह सकते है कि न केवल भारत के गाँव-गाँव में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ रही है, इसके प्रचार-प्रसार में संचार माध्यम अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

संदर्भ सूची:

1. विश्वपटल पर हिंदी , सम्पादक डॉ. महेश दिवाकर , विश्व पुस्तक प्रकाशन,पृ- 44
2. वही, पृ- 45
3. हिन्दी का वैश्विक परिदृश, डॉ. पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन
4. हिन्दी में विज्ञान लेख़न: कुछ समस्याएँ, सम्पादक डॉ. शिवगोपाल मिश्र
5. इंटरनेट